

विश्व मूलक प्रमाण ईश्वर के अस्तित्व सिद्धि सम्बंधी एक भानुभाविक परम्परागत प्रमाण है यह प्रमाण विश्व की स्वीकृति से प्रारम्भ होता है और इस विश्व की सम्यक् रूपेण व्याख्या करने के निमित्त ईश्वर के अस्तित्व को निम्न अनुमानित किया जाता है

इस प्रमाण के समर्थकों में - काश्चात्य दर्शन में प्लेटो अरस्तू डेकार्त लॉट्जिनीज बर्कले आदि आते हैं जबकि भारतीय दर्शन में न्याय वैशेषिक आदिमत के समर्थक हैं

मध्यकालीन दार्शनिक ~~हं~~ - ऐम्पिनास के अनुसार ईश्वर शुद्ध आकार एवं शुद्ध वास्तविकता है ऐसे ईश्वर का ज्ञान श्रुतियों के माध्यम से होता है परंतु हम इसे युक्तियों के माध्यम से भी जान सकते हैं

ऐम्पिनास अपनी पुस्तक 'सुम्माथ्योलॉजिया' 'Summa theologiae' में इस प्रमाण के विविध रूपों की चर्चा करते हैं जिसमें तीन रूप महत्वपूर्ण हैं

- (1) गतिमूलक प्रमाण
- (2) अकारिमकता मूलक प्रमाण
- (3) कारणता मूलक प्रमाण



(1) गतिमूलक प्रमाण - गतिमूलक प्रमाण में विश्व में विद्यमान गति के मूल आधार या आदि ह्रोत के रूप में ईश्वर के अस्तित्व को अनुमानित किया जाता है अनुभव हमें यह बताता है कि विश्व में सर्वत्र गति विद्यमान है यही अनुभव सिद्ध है कि कोई भी वस्तु स्वभावतः गतिशील नहीं हो सकती। Ex पंखा घड़े आदि

इनमें से प्रत्येक की गति का कारण कोई दूसरा तत्व है। इस दूसरे तत्व की भी गति का कारण कोई अन्य तत्व है। इस प्रकार इस क्रम में आगे बढ़ने पर अनुवस्था दोष की उत्पत्ति हो जाती है। इस अनुवस्था दोष से बचने के लिये एक ऐसी सत्ता को मानना आवश्यक हो जाता है जो स्वयं स्वनिर्भर शाश्वत एवं अपरिवर्तनीय हो।
 साध - 2 समस्त वस्तुओं एवं विश्व में विद्यमान गति का मूल कारण है गति का यही मूल स्वरूप या आदि कारण (First cause) ईश्वर है। इसी संदर्भ में अरस्तु ने ईश्वर को अगातिशील गतिदाता (Unmoved mover) कहा है।

भारतीय दर्शन में न्याय वैशेषिक दर्शन में आचार्य उदयन ने अपने 'न्याय पुष्पाञ्जलि' में इस प्रमाण का समर्थन करते हुये 'आयोजनात्' पद का प्रयोग किया है। न्याय वैशेषिक मतानुसार परमाणु स्वभावतः निष्क्रिय हैं। सृष्टि के आरम्भकाल में ईश्वर ही अचेतन एवं निष्क्रिय प्रमाणों में गति प्रदान करता है। जिसके परिणामस्वरूप सृष्टि होती है। इस रूप में यहाँ भी ईश्वर को आदि गतिप्रदानकर्ता के रूप में स्वीकार किया गया है।

गतिमूलक प्रमाण की मालोचना

(1) यहाँ गति हीन ईश्वर को विश्व की गति का मूल कारण माना गया है। परंतु यह अनुभव के विपरीत है। अनुभव हमें यही बताता है कि वही वस्तु गति प्रदान कर सकती है जो स्वयं गतिशील है।

(2) यदि विश्व की गति का कोई आदि कारण माना जाये तो फिर इससे यह निश्चय ही होना ही चाहिए



सत्ता ईश्वर है। सार्वत्रिक दर्शन में अचेतन परंतु सक्रिय प्रकृति को ही मूलकारण के रूप में स्थापित किया गया है।

2) बौद्ध मतानुसार विश्व की सभी वस्तुएँ प्रतिक्रियाशील हैं। परिवर्तन विश्व का शाश्वत एवं अनटल नियम है। सभी भी विश्व की प्रत्येक वस्तु प्रतिक्रियाशील है। तो फिर किन्हीं ईश्वर को मूलगति प्रदान करने के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता।

